विचार बिन्दु

दु:ख और वेदना के अथाह सागर वाले इस संसार में प्रेम की अत्यधिक आवश्यकता है। –डॉ. रामकुमार वर्मा

आयुर्वेदाचार्यों की सफलता के मूलमंत्र

आयुर्वेदाचार्य आयुर्वेदिक चिकित्सा के मूल आधार हैं। जब कोई व्यक्ति किसी आयुर्वेदाचार्य के पास चिकित्साहेतु जाता है, तो जीवन की संभावनाओं और मृत्यु की आशंकाओं के बीच एक विश्वास लेकर जाता है। इस विश्वास पर खरा उतरने के लिये आयुर्वेदाचार्यों को क्या करना चाहिये? इस प्रश्न का उत्तर संहिताओं मे बिना लाग-लपेट सूत्र रूप में दिया गया है। ज्ञान के अथाह भंडार में से कुछ चयनित अंश और उनके भावार्थ देखिये।

1. रोगी अपने माँ, बाप, बच्चे और रिश्तेदारों पर अविश्वास कर सकता है पर वैद्य के हाथ में पूरे विश्वास के साथ अपने आपको समर्पित कर देता है। इसलिये वैद्य को अपने बच्चे की तरह बचाव करना चाहिये (सु.सू.25.43-44): ***मातरं पितरं पुत्रान् बान्धवानपि चातुरः। अप्येतानभिशङ्केत वैद्ये विश्वासमेति च॥ विसृजत्यात्मनाऽत्मानं न चैनं परिशङ्कते। तस्मात् पुत्रवदेवैनं पालयेदातुरं भिषक्॥***

2. रोगियों के प्रति चिकित्सक का व्यवहार कैसा हो, इस पर चरक ने भी कहा है (च.सू.9.26): ***मैत्री कारुण्यमार्तेषु शक्ये प्रीतिरुपेक्षणम्। प्रकृतिस्थेषु भूतेषु वैद्यवृत्तिश्चतुर्विधेति॥*** रोगी के प्रति मित्रता और करुणा, जिनका उपचार हो सकता है उनके प्रति स्नेह और जो अंत की तरफ बढ़ रहे हैं या प्रकृति के साथ एक होने जा रहे हैं, उनके प्रति उदासीन रहना चाहिये।

3. शास्त्रोक्त ज्ञान, चिकित्सा कार्य को बहुत बार देखा-समझा होना, चिकित्सा कार्य में कुशलता और सिद्धहस्तता, और साफ-सफाई, पवित्रता व स्वच्छता आयुर्वेदाचार्यों के चार गुण हैं (च.सू. 9.6): ***श्रुते पर्यवदातत्वं बहुशो दृष्टकर्मता। दाक्ष्यं शौचमिति ज्ञेयं वैद्ये गुणचतुष्टयम्॥***

4. राजस्थान की धरती में जन्मे महान आचार्य शाङ्र्गधर ने आयुर्वेदाचार्यों को चिकित्सार्थ असीमित और अपरिमित अधिकार दिये हैं। संहिता में वर्णित होने के बावजूद वे उस द्रव्य को ग्रहण न करें जो रोगी का रोग शमन करने में उपयुक्त नहीं हैं, और जो द्रव्य संदर्भित रोग के सन्दर्भ में न भी कहा गया हो पर रोग शमन में उपयोगी हो तो उस द्रव्य को ग्रहण कर लेना चाहिये (शाङ्र्ग., पूर्व. 1.60, कुछ संस्करणों में 1.54): ***व्याधेरयुक्तं यद् द्रव्यं गणोक्तमपि तत्त्यजेत्। अनुक्तमपि यद्युक्तं योजयेत्तत्र तद् बुधः॥***

5. सही प्रकार से उपयोग करने पर विष भी उत्तम औषधि बन जाती है और गलत तरीके से उपयोग करने पर औषधि भी विष बन जाती है। तात्पर्य यह है कि किसी भी औषधि का प्रयोग उत्तम वैद्य की सलाह से ही और पूरे चिंतन-मनन के बाद ही करना उचित रहता है, अन्यथा सफलता की जगह हानि संभव है (च.सू.1.126): ***योगादपि विषं तीक्ष्णमुत्तमं भेषजं भवेत्। भेषजं चापि दुर्युक्तं तीक्ष्णं सम्पद्यते विषम्॥***

6. जो व्यक्ति स्वस्थ और जीवित रहने की इच्छा रखता है उसे ऐसे वैद्य से दवा नहीं लेनी चाहिये जो औषधियों के सही योग से अनभिज्ञ हो। यहाँ वैद्यों के लिये छिपा सन्देश यह है कि लम्बी-चौड़ी बातों से सफल चिकित्सा नहीं होती। सफलता के लिये जानकारी और ठोस कार्य आवश्यक है। जीवन और आरोग्य को चाहने वाले बुद्धिमान व्यक्तियों को उचित औषधि का प्रयोग न जानने वाले युक्तिविहीन वैद्यों से कभी चिकित्सा नहीं कराना चाहिये (च.सू. 1.126): ***तस्मान्न भिषजा युक्तं युक्तिबाह्येन भेषजम्। धीमता किञ्चिदादेयं जीवितारोग्यकाङ्क्षिणा॥***

7. आचार्य चरक ने आयुर्वेदाचार्य बनने के इच्छुक लोगों को भी समझाया है कि उन्हें अपने गुणों की संपत्ति बटोरने में पूरा दम लगा देना चाहिये ताकि वे लोगों को जीवन-प्राण दे सकने वाले वैद्य बन सके (च.सू. 1.133): ***भिषग्बुभूषुर्मतिमानतः स्वगुणसम्पदि। परं प्रयत्नमातिष्ठेत् प्राणदः स्याद्यथा नृणाम्॥***

8. जहाँ तक दवा और वैद्य का प्रश्न है, औषधि वही बढ़िया जो आरोग्य दे सके, और वैद्य वही श्रेष्ठ जो रोगों से मुक्ति दे सके (च.सू. 1.134): ***तदेव युक्तं भैषज्यं यदारोग्याय कल्पते। स चैव भिषजां श्रेष्ठो रोगेभ्यो यः प्रमोचयेत्॥***

9. संहिताओं में प्रदत्त ज्ञान रुपी ज्योति के प्रकाश में बुद्धि रुपी नेत्र से देखकर आयुर्वेदाचार्य बिना गलती किये अपना कार्य संपन्न करते हैं। चूँकि चिकित्सा के तीन अन्य पाद वैद्य पर ही आश्रित हैं, अतः वैद्य को अपने गुणों में वृद्धि करने का प्रयत्न करते रहना चाहिये (च.सू. 9.24-25): ***शास्त्रं ज्योतिः प्रकाशार्थं दर्शनं बुद्धिरात्मनः। ताभ्यां भिषक् सुयुक्ताभ्यां चिकित्सन्नापराध्यति॥ चिकित्सिते त्रयः पादा यस्माद्वैद्यव्यपाश्रयः। तस्मात् प्रयत्नमातिष्ठेद्भिषक् स्वगुणसम्पदि॥***

वैद्यों के लिये छिपा सन्देश यह है कि लम्बी-चौड़ी बातों से सफल चिकित्सा नहीं होती। सफलता के लिये जानकारी और ठोस कार्य आवश्यक है। जीवन और आरोग्य को चाहने वाले बुद्धिमान व्यक्तियों को उचित औषधि का प्रयोग न जानने वाले युक्तिविहीन वैद्यों से कभी चिकित्सा नहीं कराना चाहिये

10. जो आयुर्वेदाचार्य अर्थ तथा कामना के लिए नहीं, बल्कि प्राणिमात्र के प्रति दया-दृष्टि से चिकित्सा में प्रवृत्त होता है, वह सब पर विजय प्राप्त करता है। तात्पर्य यह है कि चिकित्सा को चिकित्सा के लिये ही किया जाये, किसी अन्य उदेश्य की पूर्ति के लिये नहीं। बात यहाँ उतनी ही गंभीर है जितनी कि भगवद्गीता का यह सन्देश कि दान केवल देने के लिये ही दिया जाना चाहिये, किसी अन्य उद्देश्य की पूर्ति के लिये नहीं (च.चि. 1.4.58): ***नार्थार्थं नापि कामार्थमथ भूतदयां प्रति। वर्तते यश्चिकित्सायां स सर्वमतिवर्तते॥***

11. आयुर्वेदाचार्यों से आचार्य चरक ने बड़ी उम्मीद किया है पर मानव-कल्याणार्थ सलाह देने के बावजूद महर्षि चरक यह कभी नहीं चाहते थे कि आयुर्वेदाचार्य गरीब रहें। इसीलिये उन्होंने आम आदमी को स्पष्ट शब्दों में आगाह किया है कि बुद्धिमान व्यक्ति जो अपनी लंबी उम्र चाहता हो, उसे अपने चिकित्सक का अहित करने की बात नहीं सोचना चाहिये, और न उसके प्रति अनादर, आक्रोश या निन्दा करना चाहिये। जो रोगी अपनी चिकित्सा के बाद आयुर्वेदाचार्य को कुछ देने का मानस बनाया हो या पहले न भी सोचा हो, तो भी यदि वह चिकित्सा के बदले कुछ नहीं देता ऐसी कृतघ्नता का कोई भी प्रायश्चित नहीं है (च.चि. 1.4.54-55): ***नाभिध्यायेन्न चाक्रोशेदहितं न समाचरेत्। प्राणाचार्यं बुधः कश्चिदिच्छन्नायुरनित्वरम्॥ चिकित्सितस्तु संश्रुत्य यो वाऽसंश्रुत्य मानवः। नोपाकरोति वैद्याय नास्ति तस्येह निष्कृतिः॥***

12. समेकित रूप में आयुर्वेदाचार्यों के कुछ खास गुण देखना तो देखिये उनमें जो वैद्यों को शिक्षित-प्रशिक्षित करने वाले वैद्य हैं (च.वि.8.4)। इनके 18 गुणों में शास्त्रों के अर्थ का यथार्थ ज्ञान, प्रत्येक चिकित्सा कार्य का प्रायोगिक ज्ञान, दक्षता, कुशलता एवं निपुणता, मन और शरीर की पवित्रता, हाथ का कौशल, सभी उपकरणों से सुसज्जित रहना, सभी इन्द्रियों से युक्त होना, प्रकृति का जानकार होना, जरूरत के अनुसार फटाफट कार्य करने वाला होना, चौतरफ़ा विषय की जानकारी, घमंडी न हो, इर्ष्या या जलन न रखे, गुस्सैल न हो, कष्ट सहन करने की क्षमता हो, शिष्य-वत्सल या शिष्य के प्रति प्रेम-भाव वाला हो, पढ़ाने वाला हो और विषयों को शिष्य के माथे में बैठाने में समर्थ हो (च.वि.8.4):

पर्यवदातश्रुतंपरिदृष्टकर्माणंदक्षंदक्षिणंशुचिंजितहस्तमुपकरणवन्तंसर्वेन्द्रियोपपन्नंप्रकृतिज्ञंप्रतिपत्तिज्ञमनुपस्कृतविद्यमनहङ्कृतमनसूयकमकोपनंक्लेशक्षमंशिष्यवत्स-लमध्यापकंज्ञापनसमर्थंचेतएवङ्गुणोह्याचार्यःसुक्षेत्रमार्तवोमेघइवशस्यगुणैः सुशिष्यमाशुवैद्यगुणैः सम्पादयति॥

13. जिस व्यक्ति में ज्ञान, तर्क-वितर्क, यथार्थ-ज्ञान, स्मरण-शक्ति, तत्परता और कार्यशीलता जैसे छः गुण हों उसके लिये कुछ भी असाध्य नहीं है (च.सू. 9.21) ***विद्या वितर्को विज्ञानं स्मृतिस्तत्परता क्रिया। यस्यैते षड्गुणास्तस्य न साध्यमतिवर्तते॥***

14. चरकसंहिता के विमान स्थान (8.14) में एक ऐसा सूत्र है जिसके कुछ अंश विश्व भर के अनेक स्त्रोतों से निरंतर नये ज्ञान के एकत्रीकरण एवं उपयोग को प्रोत्साहित करता है। आयुर्वेद का पारावार नहीं है, अतः प्रमाद छोड़ निरंतर सीखने का प्रयत्न करता चाहिये ***(न चैव ह्यिस्त सुतरमायुर्वेदस्य पारं, तस्मादप्रमत्तः शश्वदभियोगमस्मिन् गच्छेत्)।*** बुद्धिमान के लिये सम्पूर्ण संसार शिक्षक है ***(कृत्स्नो हि लोको बुद्धिमतामाचार्यः)।*** इसलिये बुद्धिमान व्यक्तियों को शत्रु से भी धन्य, यशकारी, आयुवर्द्धक, पुष्टिकारक, लोकहितकारक ज्ञान प्राप्त करना और उपयोग करना चाहिये ***(अतश्चाभिसमीक्ष्य बुद्धिमताऽमित्रस्यापि धन्यं यशस्यमायुष्यं पौष्टिकं लौक्यमभ्युपदिशतो वचः श्रोतव्यमनुविधातव्यं चेति)।***

आप कह सकते हैं कि क्या ऐसे डॉक्टर आज भी मिलते हैं? इसका उत्तर हाल में घटी एक रोचक घटना के रूप में देना ठीक रहेगा। देखिये। डॉक्टर ने पूछा: ठीक हो? मरीज ने जवाब दिया: जी डाक्टर साहब, सब ठीक है। मेरा ऑपरेशन आज कर दीजिये। मुझे वापस घर जाना है। डॉक्टर ने तमाम जाँच रिपोर्ट्स देखने के बाद एक बार फिर पूछा: पिछले पांच-छः दिन में कभी कोई समस्या तो नहीं रही। मरीज ने कहा: कोई समस्या नहीं है। डॉ. वी.बी. मिश्रा, जो आयुर्वेद के विख्यात शल्य-चिकित्सक हैं और पिछले 16 वर्षों में हज़ारों सफल सर्जरी कर चुके हैं, ने क्षारसूत्र विधि से मरीज की सर्जरी किया। कुछ समय बाद जब मरीज घर जाने के लिये तैयार हुआ तो उसे चक्कर आ गये। नर्स ने डॉक्टर मिश्रा को घटना की जानकारी दी। पूछने पर मरीज ने बता दिया कि पिछले पाँच-सात दिनों में इसी प्रकार तीन-चार बार थोड़ी-थोड़ी देर के लिये पहले भी वह बेहोश होकर होश में आ चुका है। पहले इस भय से नहीं बताया कि आप ऑपरेशन करने से मना कर देंगे। डॉ. मिश्रा ने पुनः परीक्षण के बाद तय किया कि रोगी रक्त की आवश्यकता है। मरीज के परिवार वाले ब्लड बैंक गये तो उनका किसी का ब्लड ग्रुप मैच नहीं हुआ। रोगी ने डॉ. मिश्रा को फोन पर कहा कि वह ठीक है, खून की जरूरत नहीं है। पर तब तक डाक्टर मिश्र ब्लडबैंक पहुँच चुके थे। उन्होंने अपने मरीज के लिये रक्तदान किया और रोगी को रक्त चढ़वाया।

रोगी स्वस्थ है, और इस केस स्टडी से दो बातें साफ होती हैं। पहली, जब भी आप अपने आयुर्वेदाचार्य या चिकित्सक के पास जायें तो उनसे अपनी पुरानी समस्या बताने से न हिचकें। इससे आपकी चिकित्सा बेहतर और सुरक्षित होगी। दूसरा, आज विरले ही ऐसे चिकित्सक होंगे जो अपने मरीज के लिये रक्तदान करें। इस प्रकरण में मरीज की कृतज्ञता भी काबिले-तारीफ है, हालांकि उसे इस बात का दुःख है कि उसने डॉक्टर से बेहोश होने वाली बात को छुपाया।

यों तो बात साधारण सी है पर कभी-कभी ऐसी परिस्थितियाँ आ जाती हैं जब वास्तव में डाक्टर को आचार्य सुश्रुत और आचार्य चरक के उस सिद्धान्त का निर्वाह करना ही चाहिये जिसमें उन्होंने कहा था कि अपने मरीज को अपने पुत्र की तरह मानकर चिकित्सा करना चाहिये। आयुर्वेदाचार्य डॉ. वी.बी. मिश्रा का यह कार्य चरक और सुश्रुत के सिद्धान्त का जीता-जागता उदाहरण है।

सूत्र और सलाह तो बहुत हैं पर आशा की जाती है कि इस ज्ञान को कार्य से जोड़ कर आयुर्वेदाचार्य अपने प्रयत्नों से समाज और अर्थव्यवस्था के चेहरे पर मुस्कान ला सकते हैं।

डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फॉरेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

राज्यपाल ने भरतपुर में ठंड व कोहरे के बीच फहराया तिरंगा

भरतपुर में आयोजित राज्यस्तरीय गणतंत्र दिवस समारोह में राज्यपाल कल्याण सिंह व सीएम वसुंधरा राजे ने एक-दूसरे का अभिवादन किया।

- समारोह में मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे भी मौजूद रहीं
- गुरूचरण राय व सुंडाराम को दिया राष्ट्रपति पुलिस पदक

भरतपुर, (निस)। राज्यपाल कल्याण सिंह ने शुक्रवार को भरतपुर के लोहागढ़ स्टेडियम में ठंड और कोहरे के बीच आयोजित राज्यस्तरीय गणतंत्र दिवस समारोह में झण्डारोहण किया। लोगों से खचाखच भरे स्टेडियम में राज्यपाल सिंह ने खुली जिप्सी में परेड का निरीक्षण किया। उन्होंने भरतपुर के जनसमूह का हाथ हिलाकर अभिवादन स्वीकार किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे भी मौजूद रहीं।

राज्यपाल कल्याण सिंह ने विभिन्न टुकड़ियों द्वारा प्रस्तुत मार्चपास्ट की सलामी ली। समारोह में हाडीरानी महिला बटालियन, 14वीं बटालियन आरएसी, पंजाब पुलिस, जिला पुलिस भरतपुर, जीआरपी, एसडीआरएफ और ईआरटी, करागृह, बॉर्डर होमगार्ड, अरबन होमगार्ड भरतपुर, एनसीसी, शारीरिक प्रशिक्षण, एसपीसी और स्काउट गाइड के एक-एक प्लाटून ने परेड में भाग लिया। परेड में आर्मी बैण्ड ने भी भाग लिया। परेड का नेतृत्व सहायक पुलिस अधीक्षक (प्रोबेशन) आरपीए, जयपुर मृदुल कच्छावा ने किया।

स्टेडियम में भरतपुर शहर के विभिन्न विद्यालयों के 1200 छात्र-छात्राओं और 120 लोक कलाकारों ने कोरियोग्राफर भानू भारती के नेतृत्व में सांस्कृतिक प्रस्तुतीकरण किया। 'सारे जहां से अच्छा हिन्दुस्तां हमारा', सुनो गौर से दुनिया वालो बुरी नजर न हम पे डालो सबसे आगे होंगे हिन्दुस्तानी और अरूण यह मधुमय देश हमारा जैसी राष्ट्रभक्ति की स्वरलहरियों से लोहागढ़ स्टेडियम गूंज उठा। कलाकारों ने विभिन्न नृत्य मुद्राओं में आकर्षक मनमोहक सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी। राज्यपाल कल्याण सिंह के राज्य स्तरीय गणतंत्र दिवस समारोह में लोहागढ़ स्टेडियम पहुंचने पर मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने अगवानी की। इस मौके पर मुख्य सचिव एन सी गोयल, डीजीपी ओपी गल्होत्रा, एडीजीपी बीएल सोनी, आईजी आलोक वशिष्ट, एसपी अनिल कुमार टांक, संभागीय आयुक्त सुबीर कुमार, जिला कलक्टर डॉ. एन के गुप्ता, एडीएम दिनेश जांगिड, ओपी जैन, सांसद बहादुर कौली, विधायक विजय बंसल, अनीता गुर्जर, बच्चू बंशीवाल, जिला प्रमुख बीना सिंह, मेयर शिव सिंह भौंट सहित बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधि, वरिष्ठ प्रशासनिक एवं पुलिस अधिकारीगण मौजूद थे। राज्यपाल कल्याण सिंह ने शुक्रवार को यहां लोहागढ़ स्टेडियम में राष्ट्रपति पुलिस पदक, राष्ट्रीय नागरिक सुरक्षा सराहनीय सेवा पदक, पिस्टल मय प्रशंसा पत्र और योग्यता प्रमाण पत्र से अधिकारियों और कर्मचारियों को नवाजा।

राष्ट्रपति पुलिस पदक महानिरीक्षक पुलिस (सुरक्षा) (हाल सेवानिवृत्त) गुरूचरण राय, प्लाटून कमाण्डर चतुर्थ बटालियन आरएसी चौनपुरा (हाल सेवानिवृत्त) सुण्डा राम को दिया गया। इसके अलावा राष्ट्रीय नागरिक सुरक्षा, सराहनीय सेवा पदक लीडिंग फायरमैन नागरिक सुरक्षा आत्माराम, सैक्टर वार्डन नागरिक सुरक्षा यूनुस खान, पिस्टल मय प्रशंसा पत्र उपमहानिरीक्षक एटीएस विकास कुमार, अति. पुलिस अधीक्षक एसओजी पुष्पेन्द्र सिंह राठौड़, पुलिस निरीक्षक कनीज फातिमा, कांस्टेबल वीरमदेव को दिया।

शहीद राकेश कुमार को दी अंतिम विदाई

बीकानेर के धीरदेसर चोटियान में शहीद राकेश कुमार को पुलिस ने हवाई फायर कर सलामी दी।

- अरूणाचल प्रदेश के नामसाई में शहीद हुए थे राकेश कुमार
- कलैक्टर ने मुख्यमंत्री राजे का संदेश शहीद के पुत्र को सौंपा

बीकानेर, (कासं)। अरूणाचल प्रदेश के नामसाई में शहीद हुए धीरदेसर चोटियान के राकेश कुमार चोटियां का शुक्रवार को राजकीय सम्मान के साथ उनके पैतृक गांव में अंतिम संस्कार किया गया। उनके 9 साल के पुत्र ने उन्हें मुखाग्नि दी। इस अवसर पर उपस्थित हजारों लोगों ने नम आंखों से शहीद को अंतिम विदाई दी।

जिला कलैक्टर अनिल गुप्ता और पुलिस अधीक्षक सवाई सिंह गोदारा ने शहीद राकेश कुमार की पार्थिव देह पर पुष्प चक्र अर्पित कर श्रद्धाजंलि दी। शहीद राकेश कुमार चोटिया के अंतिम दर्शन के लिए धीरदेसर चोटियान में हजारों की संख्या में लोग एकत्रित हुए। गमगीन माहौल के बीच लोग 'राकेश चोटियां अमर रहे' जैसे नारे लगा रहे थे।

जिला कलैक्टर अनिल गुप्ता ने मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे का संदेश शहीद के पुत्र को सौंपा। शहीद की पत्नी इंदिरा के नाम दिए गए संदेश में उल्लेखित किया गया था कि राकेश कुमार चोटियां ने मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया है। उनकी इस शहादत पर देशवासियों को गर्व है। इस अवसर पर उपखंड अधिकारी के.सी. मीणा, तहसीलदार गोविन्दराम चौधरी, सुमित गोदारा, रवि शेखर मेघवाल, नितिन नाई सहित सेना, पुलिस एवं प्रशासन के अधिकारी तथा बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे। इससे पहले शहीद राकेश कुमार की पार्थिव देह को शुक्रवार सुबह बीकानेर के कैप्टन चंद्र चौधरी पार्क में आम लोगों के अंतिम दर्शनार्थ रखा गया था, जहां महानिरीक्षक पुलिस विपिन कुमार पांडे, जिला प्रमुख सुशीला सींवर, युधिष्ठिर सिंह भाटी सहित अनेक गणमान्य नागरिकों ने श्रद्धांजलि अर्पित की। इसके बाद शहीद की पार्थिव देह श्रीडूंगरगढ़ स्थित गांधी पार्क में अंतिम दर्शन के लिए रखी गई जहां से बड़ी संख्या में लोगों ने शहीद को श्रद्धाजंलि अर्पित की। इसके बाद पार्थिव शरीर को उनके पैतृक गांव ले जाया गया।

जहां श्रीडूंगरगढ़ विधायक किसनाराम नाई, विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष रामेश्वर डूडी, खींवसर विधायक हनुमान बेनीवाल, प्रधान रामलाल सहित अनेक लोगों ने श्रद्धा सुमन अर्पित किए। उल्लेखनीय है कि सेना की 11 ग्रेनेडियर्स के नायक राकेश कुमार चोटियां 24 जनवरी को ड्यूटी के दौरान शहीद हो गए थे।

ज़नवाणी

सामाजिक परिष्कार की दृष्टि से परिवर्तन की आवश्यकता

आज के युग में संसार के रंगमंच पर नित नवीन घटनाएं घटित हो रही हैं। आज कोई भी देश ऐसा नहीं है, जहां की राजनीतिकस आर्थिक और सामाजिक नीति में उलटफेर नहीं हो रहा है। इन परिवर्तनों की जानकारी हम तक मीडिया की सक्रियता के कारण तुरंत पहुंच जाती है। पहले तो संचार माध्यमों की कमी के चलते परिवर्तनों की लहर दूसरे देशों तक पहुंचने में समय लग जाता था। आज के दौर में पल-पल में हो रहे परिवर्तन की जानकारी रफ्तार से मिलने लगी है।

- शैलेश सोमानी, मालवीय नगर, जयपुर

नोटबंदी विफल

सारा देश आज मोदी सरकार की नोट बंदी की पहली बरसी मना रहा है। माना की मोदी सरकार की अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने की ये ईमानदार कोशिश थी मगर इससे समूचे देश में अफरा तफरी का माहौल बना। 99 प्रतिशत नोट वापस आ जाने का मतलब यही है कि कालेधन की कवायद सिर्फ कवायद बन कर रह गई। बड़ी चतुराई से बैंकों की मिलीभगत करके व्यापारियों ने काला धन सफेद कर लिया।

- प्रकाश कीर्तिनिया रामगढ़-शेखावाटी

कार्टूनी नज़रिया

हिन्दू से साभार

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

रविवार 28 जनवरी, 2018

राशिफल

माघ मास, शुक्ल पक्ष, एकादशी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2074, मृगशिरा नक्षत्र, ऐन्द्रयन योग, विशिष्ट करण, चन्द्रमा आज दिन 2:56 पर मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मकर, चन्द्रमा- वृक्ष, मंगल-वृश्चिक, बुध-धनु, गुरू-तुला, शुक्र-मकर, शनि-धनु, राहु-कर्क, केतु-मकर राशि में।

आज मृगशिरा नक्षत्र रात्रि 1:42 तक, ऐन्द्रयन योग सांय 6:32 तक ही होगा।

आज द्विपुष्कर योग ओर राजयोग प्रातः 8:28 से रात्रि 1:42 तक है भद्रा आज प्रातः 8:28 तक है। आज एकादशी वृत है आज द्वादशी तिथि का क्षय हुआ है। आज त्रिस्पर्शा महादशी वृत, मौमी एकादशी, भीष्म द्वादशी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 8:39 ये 9:15 तक, लाभ-अमृत 9:59 से 12:40 तक, शुभ 21:00 से 3:30 तक

राहुकाल 4:30 से 6:00 तक

मेष

धार्मिक सामाजिक कार्यों में भाग लेने कर अवसर मिलेगा। शुभ कार्य के लिए यात्रा सम्भव है। दिन के मध्यान्ह पश्चात नये व पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है।

वृष

अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करे। कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेगें।

मिथुन

आर्थिक मामलों में दिन के मध्यान्ह पूर्व में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात भाग-दोड़, मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

कर्क

आर्थिक वित्तिय मामलो से सम्बन्धित कार्यों को दिन के मध्यान्ह पूर्व करने का प्रयास करे। दिन के मध्यान्ह प्रश्चात व्यक्तिगत कार्यों के कारण भाग-दौड़ रहेगी। अनावश्यक धन खर्च होगा।

सिंह

अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करे। कार्य शीघ्रता सुगमता से बनने लगेगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कन्या

धार्मिक स्थान की यात्रा सम्भव ही धार्मिक कार्यों में आस्था बड़ेगी। अटके हुए कार्य बनने लगेगे। नवीन कार्या योजना का क्रियास्यन हो सकता है।

तुला

अपनी योजना सीमित रखे। अष्ठम चन्द्र शुभ नही है। नवीन कार्य को टालना ठीक रहेगा। दिन के मध्यान्ह प्रश्चात महत्वपूर्ण कार्य के सम्बन्ध में सकारात्मक संदेश प्राप्त होगे।

वृश्चिक

घर-परिवार में आपसी सहयोग समन्वय लडेगी। परिवार में प्रसन्नता हर्षों उल्लास का माहौल रहेगा। दिन के मध्यान्ह प्रश्चात अष्टम चन्द्र शुभ नही है।

धनु

स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। अस्त-व्यस्त दिन चर्या में सुधार होगा। विवादित मामलो से राहत मिल सकती है। दिन के मध्यान्ह प्रश्चात घर -परिवार में मनोरजन मौजमस्ती के कार्यक्रम बन सकते है।

मकर

अर्नगल कार्यों में समय खराब हो सकता है। शुभ कार्य के लिए यात्रा सम्भव है। दिन के मध्यान्ह प्रश्चात स्वास्थ्य सम्बन्धित चिंता हो सकती है।

कुंभ

घर परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते है। दिन के मध्यान्ह पश्चात धार्मिक मांगलिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा।

मीन

परिवार में सुसंदेश प्राप्त होगे। मित्रों रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात घर परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।